मूल्य रु. ५-००

श्री स्वामिनारायण

मासिक

प्रकाशन दिनांक प्रत्येक महिने की ११ तारीख • सलंग अंक १८० • जुलाई-२०२२

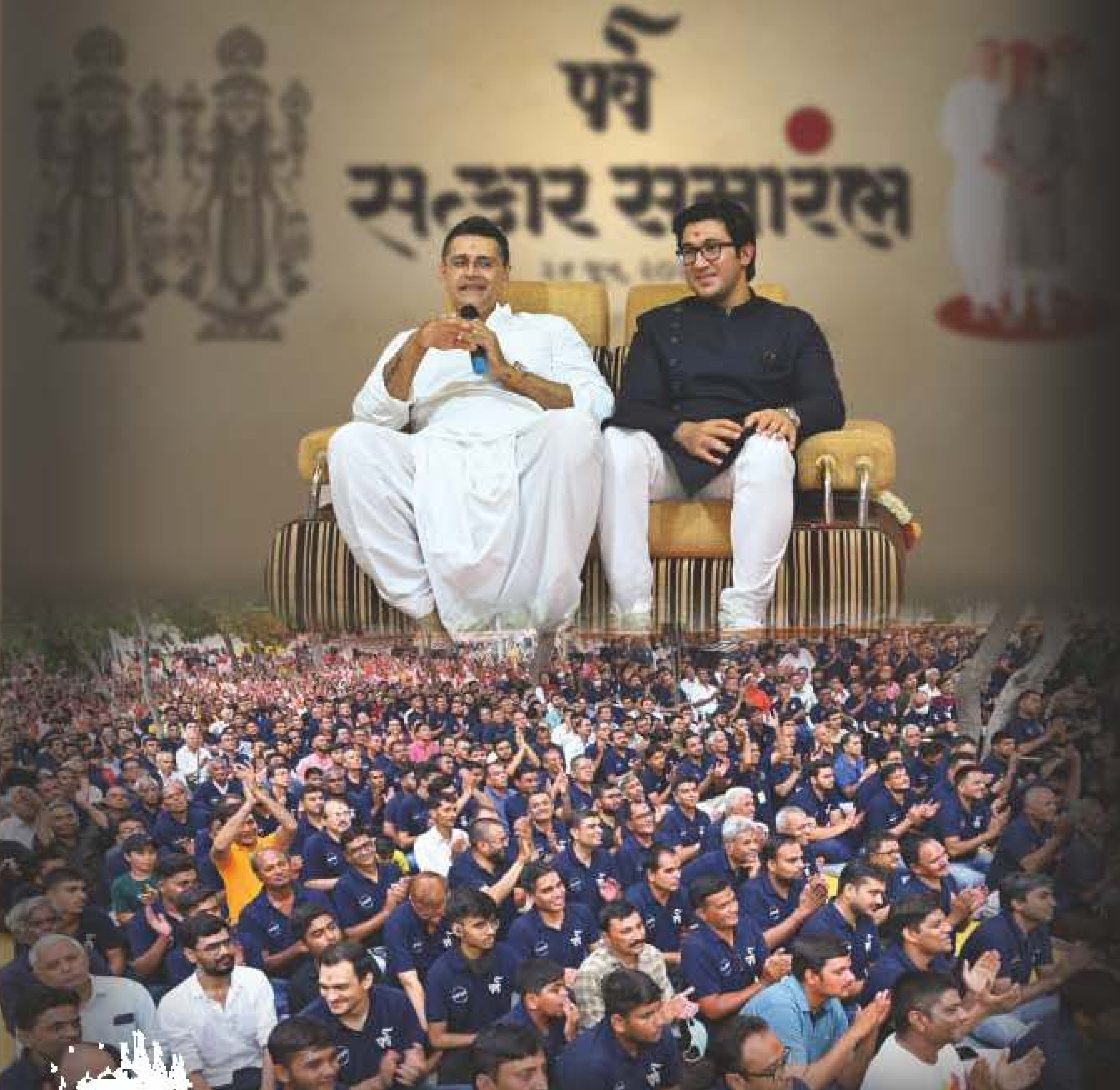

प्रकाशक : श्री स्वामिनारायण मंदिर अहमदाबाद-३८०००१.

अहमदाबाद मंदिर में ठाकोरजी को केसर स्नान करते प.पू. लालजी महाराजश्री

राणीप मंदिरमे पाटोत्सव प्रसंगे पर ठाकोरजी की अन्नकूट आरती उतारते हुए प.पू. लालजी महाराजश्री ।

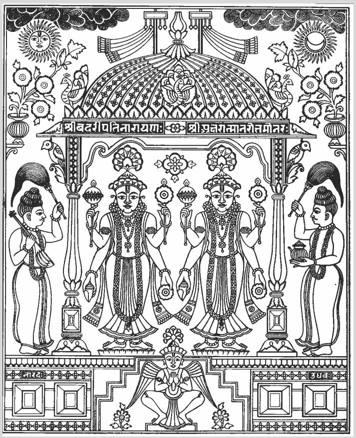

संस्थापक

श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति
प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री १००८
श्री तेजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री
श्री स्वामिनारायण म्युजियम
नारायणपुरा, अहमदाबाद.
फोन : २७४९९५९७ ● फोक्स : २७४१९५९७
www.swaminarayanmuseum.com

श्री नरनारायणेदव पीठाधिपति
प.पू.ध.धु. आचार्य १००८
श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्रीकी
आज्ञा से
तंत्रीश्री
स.गु. शास्त्री स्वामी निर्गुणदासजी
(महंत स्वामी)
मो. ९३१३७१९२३२

पत्र व्यवहार

श्री स्वामिनारायण मासिक कार्यालय
श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर,
अहमदाबाद-३८० ००१.
मो. ९३१३७०६०९५
magazine@swaminarayan.in
www.swaminarayan.info
पतेमें परिवर्तन के लिये
E-mail : manishnvora@yahoo.co.in

श्री स्वामिनारायण

श्री नरनारायणदेव पीठस्थान मुखपत्र

वर्ष - १५ ● अंक : १८० ● जलाई-२०२२

अ नु क्र म णि का

०१. अस्मदीयम् ०४

०२. प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री, प.पू. लालजी महाराजश्री के कार्यक्रम की रुपरेखा ०५

०३. यज्ञनारायण ०६

०४. गुरुपूर्णिमा २०२२ के अवसर पर शास्त्रो के प्रकाश स्तम्भ रुपी वचन ०७

०५. अहमदाबाद के ब्राह्मणो की चोराशी ०९

०६. उनावा ११

०७. श्री स्वामिनारायण म्युझियम के द्वार से १४

०८. भक्ति सुधा १५

०९. सत्संग समाचार १७

अस्मदीयम्

पवित्र चातुर्मास में अपने आराध्यदेव भगवान श्री स्वामिनारायण को खुश करने के लिये । कोई एक नियम का अवश्य पालन करके नवधा भक्ति मे लीन होना । एक सत्य सत्संग मय जीवन बनाया जा सकता है । ऐसा सत्संगमय जीवन प्राप्त करने से परमेश्वर की कृपा जीव के उपर होती है । इस समय जीव की वृत्ति भगवान के प्रति बढती है । भगवान के स्वरुप के प्रति लगाव बढता है । इसके अलावा हजार प्रकार के उद्यम करने पर भी मन कई विषयो में लिप्त होती है । उसे वहाँ से दूर करने के लिये । भगवान के पास लाने से अधिक कठिनायी आती है । इस लिये भगवान श्री स्वामिनारायण ने प्रथम के पहले वचनामृत में वह स्वयं से प्रश्न करके, सभी को ज्ञानित किये कि यह विषय कितना गम्भीर है । तथा वह कितना महान है । इसको सरल उचित भाषा ने समझाये है कि यदि आप सभी भगवान के स्वरुप में (मूर्ति में) अखंड मन की वृत्ति रखेगे तो आप को दूसरा साधन करने की आवश्यकता नही पडेगी । कारण यह है कि जिसका भगवान के स्वरुप में अखंड वृत्ति होती है । उसे कुछ बड़ा प्राप्त करने के लिये ब्रह्मांड में भगवान के एकान्तिक भक्त के लिये कुछ नही है । संसार के सभी जंजाल को एक तरफ हटाकर चातुर्मास तक ऐसा प्रयास करे कि भगवान की मूर्ति के सिवाय मन किसी पदार्थ को नही देखे । जहाँ पर अपनी दृष्टि जाये । वहाँ पर रंग महल में विराजमान घनश्याम महाराज के अलावा कोई वस्तु की कामना नही आये । उत्तम से उत्तम जीवन में कार्य करने जैसा यही कार्य है ।

संपादकश्री (महंत स्वामी)
शास्त्री स्वामी निर्गुणदासजी का
जयश्री स्वामिनारायण

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री कार्यक्रम की

रुपरेखा

(जून-२०२२)

१४ ज्येष्ठ सुद-१५ के दिन परमकृपालु भरतखंड के राजाधिराजश्री नरनारायणदेव का केसर स्नान अपने करकमलो द्वारा पूर्ण किये ।

२६ ''पर्व'' महामहोत्सव में सेवा देने वाले समिति के सदस्य एवम् स्वयं सेवको को श्री स्वामिनारायण म्यूजियममें अपने करकमलो से सम्मानित किये ।

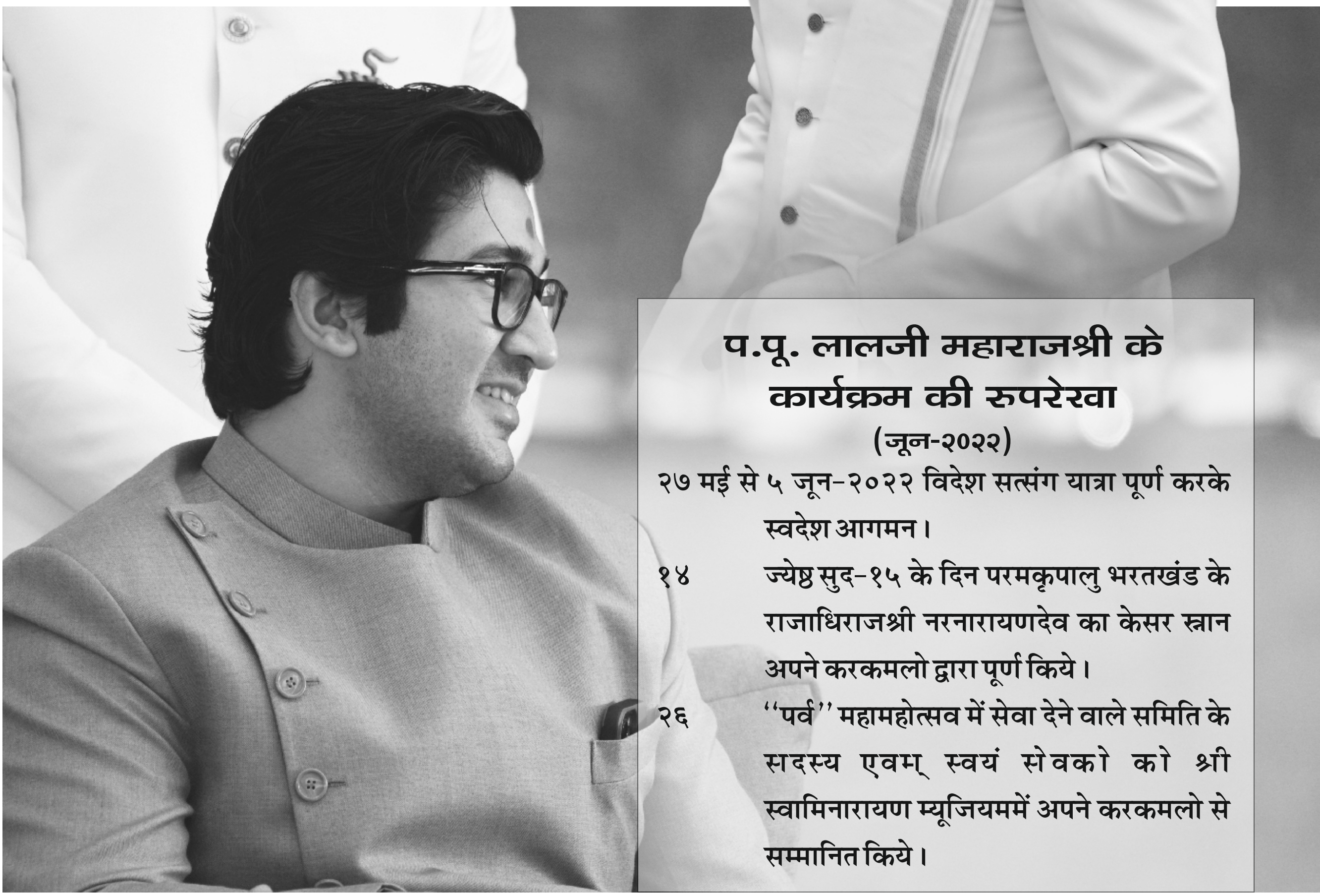

प.पू. लालजी महाराजश्री के कार्यक्रम की रुपरेखा

(जून-२०२२)

२७ मई से ५ जून-२०२२ विदेश सत्संग यात्रा पूर्ण करके स्वदेश आगमन ।

१४ ज्येष्ठ सुद-१५ के दिन परमकृपालु भरतखंड के राजाधिराजश्री नरनारायणदेव का केसर स्नान अपने करकमलो द्वारा पूर्ण किये ।

२६ ''पर्व'' महामहोत्सव में सेवा देने वाले समिति के सदस्य एवम् स्वयं सेवको को श्री स्वामिनारायण म्यूजियममें अपने करकमलो से सम्मानित किये ।

यज्ञनारायण

- साधु पुरुषोत्तमप्रकाशदास (जेतलपुरधाम)

यज्ञ, होम, वैदिक परम्परा आदि अनादि का सनातन में महत्वपूर्ण भाग है। प्राचीन आर्य मूलत: अग्नि पूजक थे। ऋग्वेद के प्रारम्भ में प्रथम शब्द अग्नि है। यज्ञ, अग्नि विजान से सम्बन्ध रखता है। यज्ञ द्वारा कुंड के अग्नि में जो भी होम के पदार्थ की आहुति दी जाती है। उस पदार्थ को अग्निदेव भष्म करके उसके विस्तार से सूक्ष्म रुप में तत्व को दैवीय शक्तियो को पहुंचा देते है। हवन पदार्थ घी, तिल, जौ आदि जो दैवीय शक्तियो को अधिक प्रिय है । जो भौतिक है । उन्हे सूक्ष्म रुप में दैवीय शक्तियो तक पहुंचाते है । इसे सूक्ष्म बनाने में अग्नि नारायण का विशेष हाथ होता है। मृत्यु लोक मनुष्य दैवीय शक्तियो को तृप्त करने के लिये या पूजा-प्रार्थना, मंत्र, तील, जप आदि सत्कर्म का फल अग्नि के अलावा कोई भी दैवीय शक्तियो की आदान-प्रदान नही कर सकता है।

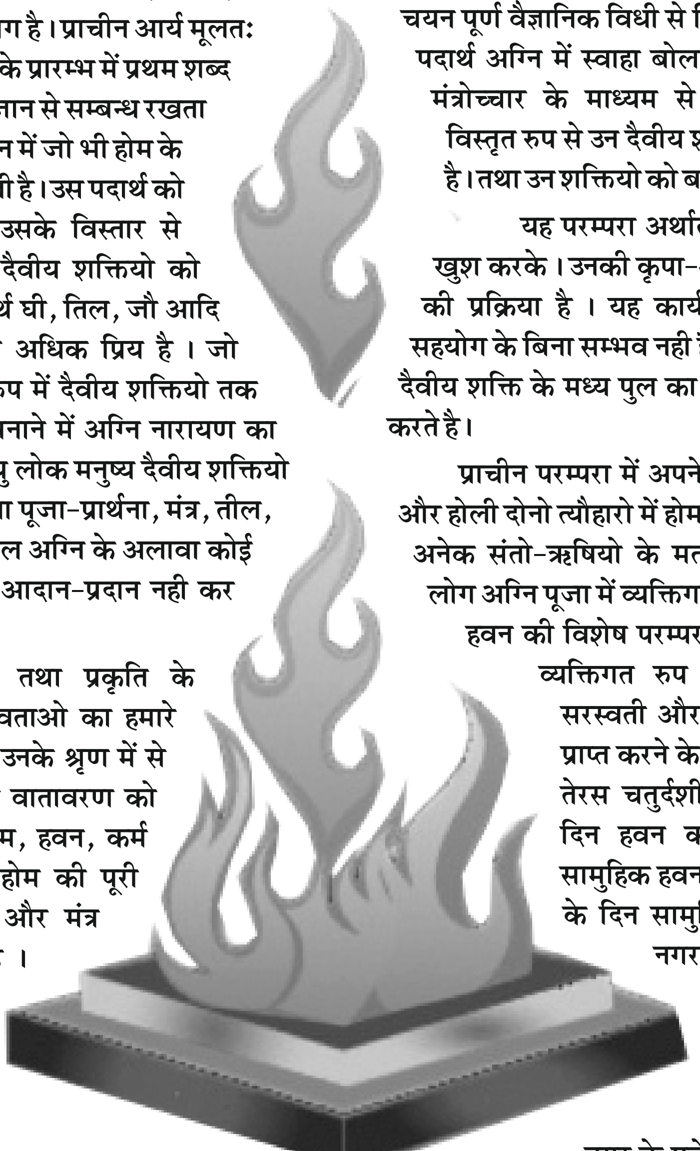

दैवीय शक्तियो तथा प्रकृति के संचालन करने वाले देवताओ का हमारे उपर अनेक उपकार है । उनके श्रृण में से मुक्त होने के लिये तथा वातावरण को शुद्ध करने के लिये होम, हवन, कर्म किया जाता है । यज्ञ होम की पूरी प्रक्रिया अर्थात् अग्नि और मंत्र निश्चित किया जाता है । तथा अग्नि कुंड की माप और समिधा को शुद्ध वैदिक गणित द्वारा सरल सूत्रो के अनुसार प्राचीन काल में अग्नि कुंड की रचना की जाती थी । उसमें विशेषकर जिस दैवीय शक्ति का मुख्य पद होता था। उसका आधार मुख्य होता था।

इसके पश्चात यज्ञ में डाले जाने वाले यज्ञ सामग्री जिसे हविष्यान कहा जाता है। इसमें भाँति - भाँति की वनस्पतियाँ की जडी-बूटी, काला तील, जौ, चावल, गुगल, गाय का घी, गोबर के उपले, काष्ठ आदि का चयन पूर्ण वैज्ञानिक विधी से किये जाते है। ये सभी पदार्थ अग्नि में स्वाहा बोलने पर डालते है । वह मंत्रोच्चार के माध्यम से वातावरण फैलकर विस्तृत रुप से उन दैवीय शक्यिो को तृप्त करती है। तथा उन शक्तियो को बलवान करती है।

यह परम्परा अर्थात् दैवीय शक्तियो को खुश करके। उनकी कृपा-आशीर्वाद प्राप्त करने की प्रक्रिया है । यह कार्य अग्नि नारायण के सहयोग के बिना सम्भव नही है। अर्थात् मानव और दैवीय शक्ति के मध्य पुल का कार्य अग्नि नारायण करते है।

प्राचीन परम्परा में अपने कई त्यौहार दिवाली और होली दोनो त्यौहारो में होम-हवन किये जाता है। अनेक संतो-ऋषियो के मतानुसार प्राचीन आर्य लोग अग्नि पूजा में व्यक्तिगत हवन तथा सामुहिक हवन की विशेष परम्परा रही है । देवालय में व्यक्तिगत रुप से महाकाली, महा सरस्वती और महालक्ष्मी की कृपा प्राप्त करने के लिये अश्विन वद पक्ष तेरस चतुर्दशी और अमावस्या के दिन हवन की जाती है । तथा सामुहिक हवन फाल्गुन सुद पूर्णिमा के दिन सामुहिक हवन के रुप में नगर, गाँव, कस्बा के निवासी जाति, ज्ञाति, वर्ण, राजा, प्रजा सामुहिक यज्ञ होली को जलाते है। नगर के प्रवेश द्वार पर गोबर का

(पेईज नं. १०)

गुरुपूर्णिमा २०२२ के अवसर पर शास्त्रो के प्रकाश स्तम्भ रुपी वचन

लेखक : गोरधनभाई वी. सीतापरा (हीरावाडी-बापूनगर)

हम सभी के आराध्यदेव भगवान श्री स्वामिनारायण इस पृथ्वी पर मनुष्यरुप धारण करके आये थे । उनके समकालीन संतो एवम् भक्तो के वे भगवान थे । वे आचार्य एवम् गुरु के पद पर भी थे । गृहत्यागी सभी लोगो का एक ही जीवन मंत्र था । कि श्रीहरि के आज्ञा में रहकर छोटे-बड़े कार्य करना । तथा भजन-भक्ति करके श्रीहरि के गुण का गान करना था । त्यागियो के लिये श्रीहरि का जितना आदेश होता था । उतनी आवश्यकता वस्तुए अपने पास रखने के सिवाय किसी वस्तु पर अपना स्वामितत्व रखने का अधिकार नही था । भिक्षावृत्ति से जीवन निर्वाह करना, श्रीहरि के आदेशानुसार गाँव-गाँव घुमकर श्रीहरि का परिचय कराके मुमुक्षुओ को श्रीहरि का आश्रित बनाकर । साक्षात् श्रीहरि के पास दर्शन के लिये लाते थे । गादीवालाजी को दिया गया है । परम्परा के धर्मवंशी आचार्यश्री श्रीहरि के तरह अति दयालु होने के कारण शरण में आने वाले को दीक्षा दे देते है । लेकिन दीक्षा प्राप्त कर लेने के बाद त्यागी को प्राप्त 'साधु' नाम का दुरुपयोग करके स्वामिनारायण का नाम लेकर रुपये एकत्र करके प्राईवेट स्कूल, गुरुकुल, धाम, आश्रम बनाकर स्वयं बड़े गुरु और महंत बन जाते है । आपने सं. २०७८ के गुरुपूर्णिमा के अवसर पर आत्म मंतन करने के लिये । गद्दी स्थान से प्रकाशित यह लेख अधिक उपयोगी होगा । गौरव की बात है कि अहमदाबाद देश में श्रीहरि द्वारा स्थापित मूल परम्परा आज तक बनी हुई है । फिर भी पूरे सम्प्रदाय के हित में यह लेख विशेषकर गुरु पूर्णिमा के अवसर पर लिखे है । हरिभक्त मात्र सम्प्रदाय के हित के नम्र विनंती है कि रसीद में लिखा हुआ तथा स्टैम्प देखकर अपने पसीने की कमाई जो आप के जीवात्मा के कल्याण के लिये दीजियेगा । वाह.... वाह.... करने के लिये देगे तो आप की दो मिनट तक वाहवाही होगी । लेकिन आप का यह दान सम्प्रदाय में विभाजन करने में उपयोग किया जायेगा । इस कारण से श्रीहरि आप खुश न होकर नाराज होगे ।

गद्दी पर विराजमान आचार्यश्री जिस समय सत्संग के कार्य को पूर्ण करने के लिये अभियान चला रहे हो । तो उनके कार्य में मिलकर अपना सहयोग दे । यह एक प्रकार की गुरु पूजा ही है । श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्रीने अलग-अलग स्वतंत्र मंदिर के ट्रस्टो का विलिनीकरण करके कालुपुर मंदिर के एक ट्रस्ट के नीचे व्यवस्था करने का अभियान उठाये है । इसमें आप सफल होकर आज तक ७५० जितने मंदिरो का विलिनीकरण कर चुके है । वर्तमान समय में मूली देश में राधाकृष्णदेव एक ही ट्रस्ट के अर्न्तगत आप का अभियान चल रहा है । इसमें आप सभी सहयोग देकर देव और आचार्यश्री कृपा प्राप्त करने की असीम अवसर है ।

गुरु से द्रोह और उनकी निंदा किसी समय भी नही करना चाहिए । नही तो त्रिशंकु जैसी हालात हो जाती है । प्राचीन समय में अयोध्यापुरी में एक त्रिशंकु नाम के राजा थे । पापी होने के कारण गुरु वशिष्ठ का अपमान किये थे । इसके बाद भी गुरु कुछ बोले नही । लेकिन वशिष्ट के एक शिष्य को यह घटना अच्छी नही लगी । उसने राजा को चांडाल होने का श्राप दे दिया । राजा उसी शरीर से चांडाल हो गये । राजा विश्वामित्र के

पास गये । विश्वामित्र ने यज्ञ करके मंत्र द्वारा चार घोडे वाले रथ पर बैठाकर आकाश की तरफ भेज दिये । राजा को स्वर्ग के समीप आते देखकर देवता लोग बोले ''रुको रुको नीचे जाओ, यहाँ पर मत आवो'' स्वर्ग से जो नीचे गिरेगा तो वह व्यक्ति साठ हजार और ८० वर्ष में पृथ्वी पर आ सकता है । राजा स्वर्ग से गिरते - गिरते उनका रथ उलट गया । इसे विश्वमित्र वापस आते देख गये । विश्वामित्र ने कहा ''स्थिर हो जाओ स्थिर हो जाओ । अब नीचे नही आना'' । इस कारण से वह उल्टे सिर लटक गये । उनके मुख से जो लार निकली । उसी को कर्मनाशा नदी कहते है । इससे जो स्नान करता है । उसके शुभ कर्मो का नाश हो जाता है । तथा रथ की छाया जहाँ पर पडी वह क्षेत्र मगध देश हुआ । इस देश में मरने वाला यमपुरी में जाता है । यह देश छपैया और गोरखपुर काशी इसके मध्य में है । यह देश उत्तर-दक्षिण चौवीस योजन, पूर्व-पश्चिम सोलह योजन है । तथा कर्मनाशा नदी मगध देश के मध्य में है । गुरुद्रोह के पाप से असंख्य जीव यमपुरी जायेगे तथा राजा भी अधिक कष्ट पायेगा । क्योकि उल्टे मुख से खाना, सोना, सुख नही देगा । बोलने में भी अच्छा नही रहेगा । यह कहानी कोई दंतकथा नही है । यह स्वामिनारायण संहिता नामक ग्रन्थ में स्वयं श्रीहरिने मेघजीत भक्तसे कहे है । श्रीहरि कहते है कि गुरु द्रोही की यह दशा होती है । गुरुद्रोह का प्रायश्चित गुरु के खुश होने पर हो सकता है । शायद कभी गुरु अर्तध्यान हो गये है । तो वे भरतखंड के सभी तीर्थो का भ्रमण करके पाप को नष्ट करते है । गुरु की निंदा करने वाले की शुद्धि कभी भी यमदूतो से भी नही हो पाती है । गुरु निंदा जिस स्थानपर हो रही हो वहाँ से कान बंद करके हट जाना चाहिए । यदि समर्थवान है तो उसे दण्डित करना चाहिए । भगवान तथा भक्त की निंदा सुनकर जाना नही चाहिए । यदि निंदक को दण्ड नही दे दो आप के पुण्य का नाश होता है ।और नरक भोगना पडता है । निंदा सुनने वाले को इतना दंड मिलता है तो ? निंदा करने वाले की क्या गति होगी ? अपने गुरु श्रीहरि के अपर स्वरुप है । भगवान के बेटे भक्त है । दूसरी ब्राह्मण भी है । पूरे जीवन भर सत्संग किये हो अन्ततः कोई अज्ञानी मनुष्य के संगत में आकर हा.....या.....ना... करके पानी नही फेर दे । इस बात पर अवश्य ध्यान दे । किसी में कोई दोष हो उस अन्य के सामने कहना निंदा कही जाती है । किसी में दोष नही है । और दोषारोपण किया जाय यह द्रोह कहा जाता है । निंदा और द्रोह ये सीधे नरक की तरफ ले जाते है । देव, ब्राह्मण, साधु और भक्त की निंदा से कुल का नाश होता है । निंदा करना पाप सम है । ऐसा पाप और कोई नही है । सेवा करने जैसा कोई पुण्य नही है । दीक्षा से रहित व्यक्ति प्रायश्चित नही करता है । दीक्षा विहीन व्यक्ति सभी कर्मो के प्रति अयोग्य कहा गया है । पशु समान गणना की जाती है । उसे नरक की अवस्था कहा जाता है । लेकिन दीक्षा प्राप्त कर लेने के बाद जीवन भर गुरु की आज्ञा में रहकर खुश रहे । यह महत्वपूर्ण है । स्वामिनारायण मूल सम्प्रदाय के गुरु स्वयं आराध्यदेव श्रीहरि ने खोजकर हमे दिये है । श्रीहरिने सम्प्रदाय के आध्यात्मिक तथा प्रशासनिक सभी अधिकार देश विभाग के लेख में दिये है । जिन्हे आराध्य देव के वचन में श्रद्धा और विश्वास है । वे लोग अपने गुरु आचार्य के आज्ञा का पालन कर रहे है । जो स्वच्छेद है वे परेशान है । सच्चे संत का वर्णन शास्त्रो में काफी कुछ बताया गया है । परंतु वर्तमान काल में सच्चे संत का यदि कोई सबसे पहला लक्षण है तो यह है कि श्रीहरि द्वारा स्थापित श्री नरनारायणदेव का बनकर रहे । और वर्तमान आचार्यश्री के आज्ञा का पालन करे । सम्प्रदाय के संविधान में समाविष्ट मंदिरो एवम् संस्था में रहे । प्राईवेट संस्था में नही रहे ।

अहमदाबाद के ब्राह्मणो की चोराशी

- चंद्रकात मोहनलाल पाठक

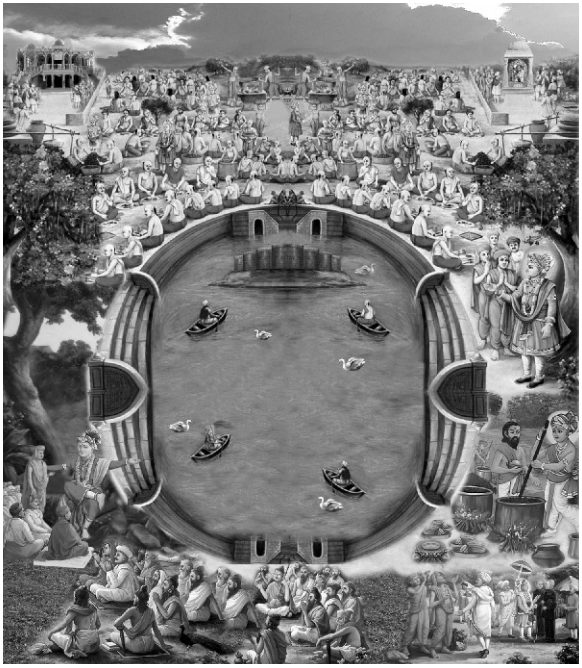

संवत १८७८ मे फाल्गुन सुद त्रीज दिन रविवार दोपहर के बाद श्रीजी महाराज ने नरनारायणदेव की मूर्ति प्रतिष्ठा किये थे । नरनारायण की आरती उतारकर बोले हम नरनारायणदेव में सदैव निवास करुँगा । हरिभक्तो के मनोरथ को पूर्ण करुँगा । इतने में ठाकुरजी के लिये थाली आई । नरनारायण को भोग लगाकर भोजन किये । संत और हरिभक्तो को खिलाये थे । संतो की सभा करने बैठे । नरनारायणदेव की महिमा कह रहे थे । श्रीजी महाराज मुक्तानंद स्वामी तथा गोपालानंद स्वामी आदि बडे संत जाकर बात किये कि हम लोगो ने देव की प्रतिष्ठा तो किये है । लेकिन अब हमे भूदेवो को चौरासी खिलाना है । गोपालानंद स्वामीने कहा कि चोरासी तो करना ही चाहिए । इसके बिना सब कुछ अपूर्ण है । महाराजने पास में रहने वाले ब्राह्मणो को बुलाये तथा चौरासी करने की बात कहे । तभी भूदेव लोग बोले कि अहमदाबाद में ६० हजार ब्राह्मण है । एक-दो दिन में समान कैसे आयेगा । इसके पूर्व एक सिद्धराजसिंह राजाने कांकरिया तालाब को भरा तथा ६ महिने तक साघन सामग्री जुटाये थे । ब्राह्मणो की बात सुनकर महाराजजी बोले हम सभी सामान दो दिन में एकत्र कर देगे । आप लोग हाँ कहे ! भूदेवोने हाँ कर दिया । तालाब के पास । ब्राह्मणोने कहा वहाँ पर धूप लगेगी । साधन-सामग्री मे कीडे मकोडे चले जायेगे । वह कैसे साफ होगा ? महाराजनेकहा आप लोगो के लिए उस दिन आकाश में बादल रहेगा । रसोई में एक भी कीडी मकोडी नही आयेगे । इसका आप को विश्वास दे रहा हूँ । इसके बाद भूदेवोने हाँ कहा । इसके बाद महाराजने खाने के सामान की व्यवस्था किये । घी, गुड, शक्कर, अरहर की दाल, चावल, गेहूँ के आटे का भंडार बना दिया । उसी समय अष्ट सिद्धियाँ आकर भगवान की प्रार्थना करके बोली, महाराज ! हमारा यहाँ पर सेवा करने का योग आया है । आप आज्ञा करे । महाराज हाँ कह दिये । तालाब के किनारे सभी सामान रख दिये ।

दूसरे दिन प्रातः स्नान तथा नित्य क्रिया करके मंदिर में देव दर्शन के लिये गये । दर्शन करके मंदिर के दरवाजे के पास खडे थे । उसी समय वजेशंकर नामक एक आदमी जूता पहन कर मंदिर में प्रवेश किये । महाराजजी बोले हमारी ईज्जत न सही लेकिन देव का तो सम्मान करे । इस प्रकार जूता पहरनकर देवका दर्शन नही करते है । उस समय यह सीढी से नीचे उतर गये । महाराज स्नान करके भोजन के लिये आये । भोजन करके थाली को अंदर स्वामी को देकर मुखवास लेकर संतो को भोजन परोसने लगे । पाँच बार ऐसी पीरस कर संतो को तृप्त किये । हाथ धोकर रसोई बनाने वाले महाराज की पूजा करके उन्हे पोशाक दिये थे । चंदन की अर्चा तथा कंकु का टीका लगाकर पैर धूए थे । तत्पश्चात महाराज घोडी पर चढकर कांकरिया गये थे। वहाँ जलपान करके मंच पर बैठे थे । सभी संत महाराज के सन्मुख बैठ गये ।

गायक संत वादय यंत्रो के साथ गाने लगे । उसी समय वजेशंकर किसी अपराध में पकडकर जा रहे थे । हाथ पैर में बेडी तथा पीछे पचास पुलिस वाले जा रहे थे । उसी समय नथ्थु भट्ट ने कहा कि कल जो जूता पहनकर मंदिर में आये थे । वे आज बजेशंकर नागर जेल खाने की तरफ जा रहे है। इन्हे पुलिस वाला पकडा है । श्रीहरि ने कहा अच्छा हुआ ऐसा न कहो । बल्कि यह कहो कि हम से यह निकल गया था । महाराज ने ब्राह्मणो को सीधा दिये थे । चौरासी वर्ण के लोगो का भोजन बना । कही कुछ खराब नही है । उसके लिये एक साधु को देखरेख में रखे थे । इस में से एक वर्ण के ब्राह्मण सीधा को गाडी में भरकर शहर की तरफ ले जा रहे थे । यह निष्कुलानंद स्वामी देख गये । गाडी को पीछे मँगवाया । एक ब्राह्मणने स्वामी को काट लिया । श्रीजी महाराज दस हजार पार्षदो के साथ वहाँ आ गये । पार्षदोने पिस्तौल दागा आवाज से ब्राह्मण गाडी छोडकर भाग गया । महाराज रसोई के पास जाकर बोले कि आप सभी लड्डू खाये, घी, शक्कर, गुड, खांड खाये । जितना चाहे उतना खाये । लेकिन हमारे साधु को नही खाये । महाराजने हलुवा बनवाया । काठियो को खिलाये । गरीबो को खिलाये, ब्राह्मणो की प्रदक्षिणा किये । स्वयं मंच पर आकर बोले कि ऐसी भीड किसी समैया मैं भी नही हुई है। इस प्रकार मुक्तानंद स्वामी तथा आनंद स्वामी को शेष बचे सामान को मंदिर पर पहुँचाने को बोलकर वह रात्रि विश्राम के लिये जेतलपुर चले गये थे ।

(अनु. पेईज नं. ६ से आगे)

उपला घी, तिल, जौ, नारियल जो वनस्पति हवन में प्रयोग की जाती है । वे सभी पदार्थ लोग यथाशक्ति के रुप में लाकर उसमे डालते है । सभी की उपस्थिति में संध्या के सयम जलाया जाता है । तथा उसी समय नगर के लोग परिक्रमा करते है । तथा प्रणाम-वंदना करते है । उस समय कोई बाहर नही जाता है । सभी लोग उपस्थित रहते है । इसे सामुहिक हवन कहते है । होलिका दहन के समय और बाद में वहाँ से लोग प्रसाद लाकर वर्ष तक संग्रह करते है।

इस प्राचीन सामुहिक हवन की परम्परा में हिरण्यकशिपु की पुत्री होलिका अपने भाई भक्त प्रहलाद को गोद में लेकर जल जाना इतिहास में वर्णित है । होली होती थी । इस में होलिका प्रवेश की थी ।

अर्थात् इसमें दो प्रकार के विचार है । एक विचार होली दहन में अवश्य भाग ले । और भक्त प्रहलाद को अग्नि में जलाने का प्रयास किया गया । वह वैष्णव परम्परा में दर्शन करने का विवाद पैदा हुआ । वास्तव में होली का पर्व एक सामुहिक हवन माना जाता है । जो लोग व्यक्तिगत होम करने में समर्थ नही है । वैसी प्रजा को लाभ देने के लिये अपने ऋषियो ने यह प्रथा प्रारम्भ किये थे ।

वर्तमान समय में होली दहन का स्वरुप एकदम बदल गया है । जो मूल रुप था । वह लुप्त हो गया । इस समय नगर के लोग अनावश्यक घास लकडी का ढेर बनाकर होली जलाते है । यह सत्य होली का स्वरुप नही है । यह होली की शुद्ध परम्परा नही है । यह केवल पर्यावरण की क्षति के अलाग कुछ लाभ नही देती है ।

होली का त्यौहार आदिकाल का सामुहिक होम बने । यह वर्तमान समय की बडी आवश्यकता है ।

अपनी संस्कृति में होली और दिवाली दो मुख्य त्यौहारो में शुद्धता बनी रहे । इससे भविष्य की पीढी को लाभ प्राप्त होगा ।

होली के पवित्र दिन पर हवा-वातावरण के आधार पर विवेचक आगामी वर्षा की भविष्यवाणी करते है।

कई राज्यो में होली के अवसर शरीर की अवस्था का ध्यान न देकर मनाते है । इस लिये होली नही खेलना चाहिए। ऐसा श्रीजी महाराज शिक्षापत्री में श्लोक संख्या १७२ में बहनो को लक्ष्य बनाकर लिखे है।

श्रीजी महाराज के वचनामृत गढडा मध्य-८ में कहे है । जब ब्रह्माजी ने प्रथम सृष्टि बनाये । तो सभी प्रजा के लिये बोले ''आप सभी लोग यज्ञ करना । यज्ञ द्वारा सभी पुरुषार्थ पूर्ण होगा । और सृष्टि की भी वृद्धि होगी । इस यज्ञ अवश्य करे । तत्पश्चात् वेद में कई प्रकार के यज्ञ थे । वह ब्रह्माजीने सब विधि पूर्वक बताये ।

अहमदाबाद शहर के समीप श्री स्वामिनारायण भगवान के प्रसादी के गाँव

उनावा

संकलन : प्रफुल खरसाणी

- अहमदाबाद कालुपुर मंदिर से सडक द्वारा २ घंटे १० मिनट
- अमहादाबाद हवाई अड्डे से १ घंटा ४० मिनट

यहाँ के हरि मंदिर दक्षिण मुखी दरबार है। प्रथम संवत १९०२ स.गु. महानुभावानंद स्वामीने मंदिर निर्माण किये थे। और स्वामीने इस गाँव को आशीर्वाद दिये है। समय जाते १९६२ में स.गु. स्वामी देवचरणदासजी की प्रेरणा से गाँव के सत्संगी के सहकार से तीन शिखरवाला यह मंदिर निर्मित है। यहाँ पर सहजानंद स्वामीकी मूर्ति प्रतिष्ठित है। इस मूर्ति की प्रतिष्ठा संवत १९६२ वैशाख मास के तेरस के दिन ध.धु. आचार्यश्री वासुदेवप्रसादजी महाराज के मार्गदर्शन मे किया गया था।

इस गाँव में श्रीजी महाराज तीन बार आये थे। श्रीजी महाराज जिसके घर पर उतरे थे। छलाभाई का घर प्रासदी का है। गाँव के मध्य छत्री है। वहाँ बरगद के नीचे बैठकर सभा किये थे। मदिर के सिंहासन के पास जो चरणारविंद है। वहाँ पर माणकी घोडी खडी थी। बडे माँढ में कुँवा है । यह बरगद अभी सुरक्षित है। माढ की फलियाँ में परमहंसो को भोजन कराये थे। यह गाँव गांधीनगर तालुका जिला में स्थित है।

उनावा में श्रीहरि : पूर्ण पुरुषोत्तम श्री स्वामिनारायण भगवान उनावा गाँव में आकर अधर्म का नाश करने के लिये धर्म की स्थापना किये थे। अपने भक्तजनो के संकल्प को पूर्ण करके उनावा गाँव को अपने चरण कमल से प्रभावित किये थे। श्रीहरि कोलवडा गाँव से उनावा आये थे। इस अवसर का वर्णन स.गु. निष्कुलानंद स्वामीने ''भक्तचिंतामणी'' में पाठ-८३ में किये है।

करे लीला जन मन भावे, त्यांथी अलबेलो आव्या उनावे ॥९॥
तियां भक्त रूडो रामदास, तेने घेर गया अविनाश ॥
नरनारी अपार हरख्यां, थयां राजी नाथजी निरख्या ॥१०॥
धूप दीप उतारी आरती, जुगते जमाड्या प्राण पति ॥
बीजी बहुं रीते करी रसोइ, जम्या नाथ हाथे संत सोइ ॥११॥
जम्या जन हुवो जे जे कार, रहि रात्य त्यां चाल्या मुरार ॥
एक गाम नामे छे नादरी, तियां पधारिया पोते हरि ॥१२॥

किसी समय भगवान श्रीहरि पाँचसौ परमहंसो और भक्तो के साथ बिजापुर से उनावा आये थे । उस समय उनावा में रहने वाले रामदासभाई, रघुभाई और वैश्य लोग नानीबा आदि महिलाये श्रीहरि का उत्साह से दर्शन किये थे । श्रीहरि भगवान पटेल रामदास के घर आये थे । रामदसाभाईने महाप्रभु को जल से स्नान कराये थे । स्वयं श्रीहरिने सुंदर थाली बनाकर भगवान को भोग लगाकर भोजन करने बैठे थे । भोजन करे के बाद श्रीहरि महाप्रभु का रामदासभाई द्वारा भेट की गई । पश्चिम देश में जन्मी घोडी को वहाँ सो लेकर सरोवर के किनारे रहने वाले अपने निवास स्थान पर आये । श्रीहरि महाप्रभु रामदासबाई के उपदेश दिये । कि हे श्रेष्ठ भक्त ! यह शरीर तथा शरीर के पदार्थ सभी प्रपंचमय है । संसारी स ा ु ख नाशवंत है । संसार के माया का त्याग करके हमारे में वृत्ति रखे । श्रीहरि गाँव वालो को उपदेश देकर सभी के मनोरथ को पूर्ण करके वहाँ से माणसा गये थे ।

श्रीहरि करजीसण से उनावा के विचरण में थे ।

एकबार श्रीहरि महाप्रभु अपने संतो-पार्षदो तथा काठी घुडसवारो के साथ करजीसण गाँव से उनावा गाँव के अति उत्साही रामदास पटेल बाजीदास पटेल वणारशीभाई, रघाभाई आदि भक्त श्रीहरि की कृपा हेतु समैया लेकर गये थे । ढोल-नागरे के आवाज के साथ भगवान स्वामिनारायण उस गाँव में गये थे । खेत में काम करने वाले भावि भक्तजन कार्य छोडकर दौडते-दौडते श्रीहरि के दर्शन के लिये आये । उससे हजारो हरिभक्त की भीड जमा हो गयी थी । सभी ने प्रेम सहित श्रीहरि का चरण स्पर्श किये थे । हे दीनबंध ! हे सर्वेश्वर महाप्रभु ! ये सभी खेतो से काम छोडकर आप के दर्शन के लिये आये है । इन लोगो के पैर में चोट आई है । तथा चोट के स्थान से रक्त निकल रहा है । इनके उपर कुछ कृपा करे । तभी श्रीहरिने कहा कि रामदास हमारे लिये जिन लोगो ने कष्ट उठाया है । वे सभी भक्त जन्म-मरण रहित मेरे धाम को प्राप्त हो । इसके बाद प्रभु रामदास के घर पर आये थे । श्रीहरि तथा संत-पार्षदो को रामदासने सुंदर भोजन बनाकर सबको भोजन खिलाकर तृप्त किये । भोजनोपरांत श्रीहरि झूले पर सो गये । कुछ देर आराम करने के बाद लोगो से बात किये । वहाँ से घोडे पर सवार होकर वर्तमान मंदिर तक आये थे । घोडे को खडाकर प्रभुने रामदास आदि भक्तो को उपदेश दिये थे । आप का गाँव धन-धान्य से सुखी रहे । और सत्संग भी अधिक हो । वहाँ से प्रभु गाँव के किनारे तालाब के किनारे पर कुए के पास आये थे । वहाँ पर विशाल सभा करने बैठ

गये । श्रीहरिने वहाँ पर कहा कि मनुष्य जन्म का क्या कर्म है ? धर्म अधर्म के बारे में बताये । वहाँ से बालवा गाँव की तरफ गये थे ।

विहार के पीताम्बर त्रावडी को श्रीहरिने उनावा में दीक्षा दिये थे । कपिलानंद नामक ब्रह्मचारी बनाये थे ।

श्रीहरि दंढाव्य देश के गाँव-गाँव में विचरण कर रहे थए । साथ में पाँचसौ परमहंस तथा काठी घुडसवार भी रहते ते । विहार के पीताम्बर त्रवाडी भी श्रीहरि के समीप रहते थे । एकबार पीताम्बर त्रवाडी ने श्रीहरि से बोले फिर कब तक आप इस तरह रहेगे । जीव का कल्याण करना है कि नही ?

यह सुनकर पीताम्बर त्रवाडी ने कहा कि महाराज जो आदेश दे वह मंजूर है । यह बात सुनकर उन्हे ब्रह्मचारी बनाने का विचार आया । यह विचार श्रीहरि उनावा में आकर पूरा किये । उनावा में पीताम्बर त्रवाडी को दीक्षा देकर श्रीहरि कपिलानंद नामक ब्रह्मचारी बनाये थे ।

उनावा गाँ वके हरिभक्त श्री डाह्याभाई गाडी लेकर श्रीजी महारजा के दर्शन हेतु अहमदाबाद जा रहे थे । साबरमती नदी पार करते ही गाँडी के पहिए से कील निकल गई । इस कारण से पहिया अलग हो गया । रास्ते में वह कील की खोज किये । लेकिन वह नही मिला । शायं काल होने पर श्रीजी महाराज का नाम रटने लगे । उतने में वहाँ पर एक भरवाड आया और कहा कि शाम हो गयी है । और नदी में बैठकर क्या कर रहे है । गाडी लेकर गाँव में आजाओ नही तो चोर लोग लूट लेगे । तब छलाभाई उस भरवाड से बोले कि ''गाडी की पहिया की कील निकल गयी है । इस कारण से बैठा हूँ । भरवाडने कील देकर कहा यह मुझे रास्ते में मिला है । यब बोलकर भरवाड वहाँ से चला गया । उसे जाते देखा नही । तब छलाखाई को लगा । ''महाराज ने हमारी रक्षा किये है । वह पहिये में कील डालकर अहमदाबाद की तरफ चल दिया । बाद में वह गढडा के लिये प्रस्थान किया । गढाडा में जाकर महाराज को दंडवत प्रणाम किया । तब महाराज बोले ''साबरमती में कील खो गयी थी क्या ? तब छलाभाई बोले ''हाँ महाराज उसे एक भरवाड दे गया था । उन्होने कहा कि आप की रक्षा के लिये हम आये थे । यह सुनकर सभी लोग खुश हुए ।

श्री स्वामिनारायण म्युझियम

श्री स्वामिनारायण म्युजियम के द्वार से

अपने म्यूजियम में श्रीमद् भागवत सप्ताह पारायण का सफलता पूर्वक कार्यक्रम पूर्ण किया गया। उसकी पूर्णाहुति दि. २६-०६-२०२२ के दिन हुई थी इसी दौरान शायंकाल के समय ''पर्व'' महामहोत्सव मे सेवा देने वाले सभी समिती के सदस्यो तथा स्वयं सेवको के लिये सत्कार समारम्भ प.पू. आचार्य महाराजश्री तथा प.पू. लालजी महाराजश्री के उपस्थिति में मनाया गया। वर्षा की रास्ते देखते हुए भक्तो की हाजिरी में वर्षा आयी। सभी लोग प्रासद ग्रहण करके अलग हुए।

श्री स्वामिनारायण म्युजियम में पंजीकृत यज्ञ की सूची -जून-२०२२

दि. ३०-०६-२०२२ प.भ. श्रीमती नयनाबेन हरेशभाई महेता - नवा वाडज।

श्री स्वामिनारायण म्युजियम में पंजीकृत श्री महाविष्णुयाग यज्ञ की सूची -जून-२०२२

दि. ०५-०६-२०२२ प.भ.श्री भरतभाई मोजीदरा - मणीनगर - प्रे. गुरु स्वामी तथा आनंद स्वामी।

दि. १२-०६-२०२२ प.भ.श्री दीपेशकुमार प्रवीणभाई - राणीप

दि. १७-०६-२०२२ प.भ.श्रीअ.नि. गोदावरीबेन अमृतलाल पंचाल - टोरडावाले - वर्त. गांधीनगर - प्रथम वार्षिक पुण्यतिथि के अवसर पर - हाल में वर्णिन्द्र तथा हितेश।

दि. २६-०६-२०२२ प.भ.श्री डॉ. नरेन्द्रभाई डी. भावसार - मेहसाणा।

श्री स्वामिनारायण म्युजियम में भेट देनेवालों की सूची - जून-२०२२

रु।.५१,०००-०० प.भ.श्री डाह्याभाई नारायणदास पटेल परिवार, अ.सौ. विमलाबेन डाह्याभाई पटेल के जन्म दिन के अवसर पर माणसावाले - वर्त. थलतेज।

रु.।२१,०००-०० स.गु. शा. स्वामी हरिकेशवदासजी - स्वामिनारायण मंदिर गांधीनगर से-२३ - वर्त. हरिप्रिय स्वामी।

रु.।२१,०००-०० प.भ.अ.नि. बलदेवभाई लालदास पटेल - झुलासण - वर्त. नारायणपुरा - वर्त भगवतीबेन बलदेवभाई पटेल।

शुभ प्रसंग पर भेंट देने के योग्य अथवा व्यक्तिगत संग्रह के लिये - श्री नरनारायणदेव की प्रतिमा वाला ५/१०/२० ग्राम चांदी का सिक्का म्युजियम में प्राप्त होता है।

सूचना :श्री स्वामिनारायण म्युजियम में प्रति पूनम को प.पू. मोटा महाराजश्री प्रातः ११-३० को आरती उतारते हैं।

સંપ્રદાયમાં એક માત્ર વ્યવસ્થા શ્રી સ્વામિનારાયણ મ્યુઝિયમમાં મહાપૂજા / મહાભિષેક નોંધાવવા સંપર્ક કરો.

મ્યુઝિયમ મોબાઈલઃ- ૯૮૭૯૫૪૯૫૯૭, પ.ભ. પરષોત્તમભાઈ - દાસભાઈ (બાપુનગર) : ૯૯૨૫૦૪૨૬૮૬
www.swaminarayanmuseum.org/com • email: swaminarayanmuseum@gmail.com

॥भक्तिसुधा॥

(प.पू.अ.सौ. गादीवालाश्री के आशीर्वचन में से) एकादशी सत्संग सभा के अवसर पर (कालुपुर मंदिर हवेली) "आवश्यकतानुसार जीना सीख लेने से गलत कार्य नही होता है"

(संकलन : कोटक वर्षा नटवरलाल - घोडासर)

आज कौन सी एकादशी है। ''पाप मोचनी'' हम जो जाने-अनजाने में 'पाप' करते है। जो गलत कार्य हमारे होते है। उसका फल हमें दुख मिलता है। तो हम कहते है कि भगवान की ईच्छा से दुःख मिला है। ये गलत बात है। ''भगवान किसी को कभी दुःख देते ही नही है।'' जो चोर चोरी करता है। तो उसे भी ज्ञात होता है कि यह गलत कृत्य है। तभी वह छिपकर करता है। चोर-चोरी कब करता है ? अंधेरे में ऐसा क्यो ? यह गलत है। कोई देखता नहीं है इस लिये करता है। इस लिये जो अपना साधारण धर्म है। उसका उल्लंधन करके कार्य करे तो फल खराब आता है ? अग्नि को छूने पर जलते है। यह सभी को पता है। इसका अर्थ यह है कि कोई कार्य करिये तब बुद्धि और विवेक से विचार कर करे। हम गाडी चला रहे हो तो और लड जाये। तो गाडी बनाने वाले का दोष है या गाडी चलाने वाले का दोष है ? जो चलाता है। उसका दोष माना जाता है। यह अपनी गाडी रुपी शरीर है। उसके मालिक भगवान है हमे नई गाडी दिये है। उसे कैसे सम्भाला जाय। उसे कैसे रखा जाय। उसकी सर्विस करायी जाती है। सभी उद्यम का ध्यान देना पड़ता है। हम लोगो को प्रति एकादशी के दिन सर्विस हो जाती है। यह अपने कर्मो के द्वारा होता है। एक प्रश्न बडा निराकरण होने पर दूसरा प्रश्न उपस्थित हो जाता है। अपने कर्म के अनुसार फल मिलता है। तो प्रश्न यह उठता है कि जीवन में भगवान की क्या आवश्यकता है ? मंदिर किस लिये जाये ? भगवान का भजन करना चाहिए ? जीवन में भगवान के साथ लेकर चलने की क्या आवश्यकता है ? भगवान को साथ में लेकर चलने में इतना अन्तर है। एक अनाथ बालक होता है। उसका जीवन कैसा होता है ? एक माता-पिता के साथ बच्चा हो इन दोनो के जीवन देखे क्या अंतर है ?

अनाथ बालक को कोई प्रेम देने वाला तथा जिम्मेदारी नही उठाता है। इस प्रकार यदि भगवान को हम पास रखेंगे तो भगवान अपनी सभी जिम्मेदारी ले लेते है। भगवान हम सभी को प्रेम करते है। मार्गदर्शन देते है। जब तक बच्चे बच्चियो का व्यवहार अच्छा रहता है। आचरण अच्छा होता है तो माँ-बाप बोल देते है कि अब मेरे बच्चे के साथ कुछ भी लेना-देना नही है। इसी प्रकार जब तक अपना अन्तकरण शुद्ध होता है। तब तक भगवान हमारा साथ देते है। एक आदमी खाने का शौकीन होता है। जप-तप करने की ईच्छा नही रखता हो। पत्नी भोजन बना-बनाकर थक गई हो। एक दिन उसके गाँव में संत आये। उन संतो को पेट बडा था। उसे ऐसा लगा कि संतो को अच्छा भोजन मिलता होगा। तो मैं भी संतो के साथ रहने लगू। तो भर पेट भोजन तो प्राप्त होगा। उसने संतो से विनती किया कि ''हमें साथ ले जाये, मुझे भोजन करने की आसक्ति है। आप लोगो को तो अच्छा भोजन तो मिलता होगा ? मुझे आप भक्त बनाये मैं भगवान का नाम लूगा। उसके बदले में मुझे आप भोजन देगे।'' संतो के साथ जाने के बाद वह भाई सदैव रसोई के पास बैठा रहता था। और सीताराम सीताराम करता था। इतने में एकादशी का दिन आ गया। शिष्यने गुरु से कहा ''मै भोजन के बिना सायं तक जीवित नही रह सकता हूँ। इस कारण से गुरु अनाज देकर बोले ''नदी के किनारे जाकर भोजन बना लेना। तथा भगवान का भोग अवश्य लगाना। तभी भोजन प्रारम्भ करना। वह नदी के किनारे जाकर तीन रोटी बनाया। उसे गुरु की बात याद आई कि भगवान को भोग अवश्य लगाना। वह राम-राम करने लगा। निखालस और स्वच्छ, मनुष्य की आवाज प्रभु अवश्य सुनते है। अर्थात् 'राम' भगवान वहाँ आये। और दो रोटी खाये। शेष

एक रोटी को शिष्य ने खाया । पुनः एकादशी आयी । उसने विचार किया अधिक सीधा ले जाये । ''गुरु से वह बोला अबकी अधिक सीधा देना क्योकि आपके भगवान के लिये भी चाहिए । गुरुने अधिक सीधा दिये जिससे वह छ रोटी बनाकर भगवान का रास्ता देखने लगा । तो राम भगवान सीता की साथ आये । और पांच रोटी खा गये ।उसके लिये पुनः एक रोटी बची पुन दूसरे एकादशी को नव रोटी बनाया । तो इस बार राम, सीता और हनुमानजी तीनो आ गये । तत्पश्चात् पुनः एक रोटी बची ! फिर कुछ दिन बाद एकादशी आयी तो उससे गुरु से कहा कि सीधा अधिक दिजियेगा कितने भगवान आये यह निश्चित नही है । इस लिये गुरु ने अधिक सीधा अन्न दे दिया । नदी के किनारे बैठकर सभी सामग्री रखकर सोचने लगा ये लोग आये तभी भोजन बनायेगे । ताकि कम नही पडे । इतने में भरत, शत्रुघ्न, लक्ष्मणजी इस प्रकार नव लोग आये । शिष्य ने कहा मुझे भोजन नही बनाना है । आप अपने धर्मपत्नि से कहे कि वही भोजन बनाये । बाद में सीताजीने सभी को भोजन कराई । सभी लोग भोजन कर रहे थे । उसके गुरु आये । इसको भोजन करने की अति आसक्ति है । यह झूठ बोलता होगा । तो चलकर देखते है । वह देखने आये । शिष्यने कहा कि दर्शन करे सभी भगवान भोजन कर रहे है । तो गुरुने कहा कि हमे नही दिखाई दे रहे है । इस कारण से शिष्य राम के पास जाकर कहा ''कृपा करके हमारे गुरु को दर्शन दे '' वैसे देखे तो एक गुरु अपने शिष्य को भगवान के पास ले जाता है । यहाँ तो एक शिष्य गुरु को भगवान के पास ले जाता है । इसका अर्थ यह है कि निखालस - स्वच्छ(कल-कपट रहित)होने पर भगवान दर्शन देते है । जिस प्रकार शुद्ध जल में स्थिरता होने पर प्रतिबिन्ब देखा जा सकता है । उसी प्रकार अन्तकरण शुद्धि और निर्मल होने पर अध्यात्मिकता का प्रतिबिंब दिखाई देगा । भगवान की अनुभूति होगी । यह मन के भटकने को कम करता है । तभी यह हो सकता है । हम आवश्यकता से अधिक सुन लेते है । जो नही देखता हो वह दिखाई दे देता है । निरर्थक कार्यो ने समय बीत जाता है । सूई में धागा डालने के लिये सूई को स्थिर रखना पडता है । इसी प्रकार जब अंत्तर में परमात्मा को लाना हो तो कम्पन आने लगता है । जैसे ताले की दाहिने धुमाने पर खुल जाता है । बाये तरफ धुमाने पर बंद हो जाता है । मन चाभी जैसा है । मन बंधन-मुक्ति दोनो की चाभी है । भगवान के तरफ खुलते है । और जगत की तरफ बंधन होता है । इस सबका मूल कारण इच्छा है । हम लोग मन के गुलाम बन जाते है । क्योकि ? ईच्छापूर्ति के दौडने लगते है । इच्छा और आवश्यकता में बहुत अंतर है । रोटी, कपडा और मकान व्यक्ति के लिये आवश्यकता है । रहने के लिये छत चाहिए । दो कमरे को मकान में समाहित हो सकता है । उससे बड़े बंगले की अपेक्षा यह इच्छा है । रोटी आवश्यकत है । लेकिन छप्पन भोग, इच्छा है । कपडा तन ढकने के लिये आवश्यक है । २५० और ५०० रुपये की पंजाबी साडी चलती है । दस हजार का कपडा लेना ये इच्छा है । आप के पास पैसा है । बड़े मकान में रहते है । इसमें कोई कष्ट नही है । ईच्छा स्वयं की होती है । कई बार हम लोग ईश्वर के उपर डाल देते है । लोगो को जीभ पर लगाम नही है । २५० रुपये की साडी पहरेगे तो भी लोग कहेगे लोभ है । कहने का अर्थ है कि आवश्यकतानुसार जीवन रखने पर व्यक्ति कम दुःखी होता है । जब मानव आसक्ति में बंध जाता है । तब एक इच्छा की पूर्ति होने पर दूसरी ईच्छा जागृत हो जाती है । रोटी-घर मिल जाय तो यह अच्छी बात है । बाकी सभी इच्छाओ की पूर्ति किसी की हुई नही है और होगी भी नही । सिकंदर महान सम्राट था । उसकी भी ईच्छा पूर्ण नही हो सकी । इस लिये मन जगत में भटके उसे कम करने के लिये भगवान के नाम का सुमिरन करना चाहिए । इससे मन स्थिर रहेगा । सभा में बैठने पर मन की अवस्था पर प्रभाव पड़ता है कि नही । प्रलोभन में नही आना चाहिए । सहजता में भगवान सब कुछ समझ जाते है । बालक को चलने-बोलने नही आता है । फिर भी महाराज सब कुछ सुन लेते है । चार वेद नही पढे । अठ्ठारह पुराण नही पढे तो चलेगा । मन को साध लेने से बेडा पार हो जाता है । कोई तकलीफ नही आती है । नाम स्मरण सदैव चालू रखे । महाराज आप को अधिक बल दे । अपने मन को स्थिर रखने के लिये और 'माया' आप की भक्ति में अवरोध नही करे । ऐसी शक्ति आप को मिले । ऐसी महाराज के चरणो में प्रार्थना है ।

सत्संग समाचार

"पर्व" स्वयं सेवक सत्कार समारम्भ

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की ईच्छा से और धर्मकुल परिवार के सीधे देख-रेख के नीचे तथा अपने उत्सवो के स्वयं सेवक के रुप में जिस किसी भक्त ने छोटी-बडी सेवा दिये है । उन्हे देव तथा धर्मकुल कभी भूलता नही है । परम्परानुसार ऐतिहासिक ''पर्व'' महामहोत्सव जिसने समिति के सदस्य रुप में स्वयंसेवक के रुप में सेवा दिये थे । उनके सत्कार के लिये ता. २६-०६-२०२२ दिन रविवार को शायं ४ बजे अपने श्री स्वामिनारायण म्यूजियम में यज्ञशाला के पास प्राकृतिक वातावरण में सत्कार समारम्भ आयोजित किया गया था ।

श्री स्वामिनारायण नाम के मंगलमय धुन के साथ कार्यक्रम प्रारम्भ किया गया । पर्व में जिन संतो ने सेवा दिया था ।उनमे से जेतलपुर, कोटेश्वर, कांकरिया, गांधीनगर से-२ तथा मूली के विद्वान संत अपने उद्बोधन में ''पर्व'' के सस्मरणो के साथ सेवा महिमा का वर्णन किये थे ।

प.पू. लालजी महाराजश्री अपने आशीर्वचन में स्वयं सेवक के रुप में पंजीकृत (३९०० जितने) लोग किसी प्रकार की भी सेवा दिये है तो श्री नारायण ध्यान देगे । उनका कार्य हो गया है । दो बड़े उतसव प.पू. महाराजश्री की स्वर्ण जयंती महोत्सव ता. ३ से ५ अक्टूबर-२०२२ और मूलीधाम का उत्सव ता. २० से २६ जनवरी-२०२३ की एलान हो गया । उसी प्रकार बाल मंडल और युवक मंडल के क्रिया-कलाप तथा सभाओ को वेग देने का अनुरोध किये है ।

सायं ६-२० पर मेघराजा कृपा करके वर्षा का माहौल बना दिये । प.पू. महाराजश्रीने म्युझियम के हाल में आशीर्वचन सहित प्रत्येक को चरण स्पर्श का अवसर देकर बोले सभी सुखी रहे । प.पू.अ.सौ. गादीवालाश्रीने बहनो को दिव्य सुख दिया । गांव से आये स्वयं सेवको को ''पर्व'' के लोगो को साथ सम्मान पत्र प्रदान किये थे । जिस में लिखा गया है कि हम सभी सर्वावतारी श्रीहरि के स्वरुप ऐसे श्री नरनारायणदेव के आश्रित है । जीवन भर पूरे परिवार के साथ रहेगे । अंत में भोजन प्रसाद लेकर सुखद यादो के साथ लोग अलग हुए ।

(गोरधनभाई वी. सीतापरा)

अहमदाबाद मंदिर में श्री नरनारायणादि सभी देवो को चंदन का वाधा तथा केशर स्नान का दर्शन

विश्व के स्वामिनारायण सम्प्रदाय का सर्व प्रथम महामंदिर कालुपुर अहमदाबाद में ठाकुरजी की परम्परागत सेवा विधी के अनुसार प्रचंड गरमी में ठाकुरजी की शरीर शीतल रहे । तथा दर्शनार्थी खुश और आनंदित हो ऐसे शुभ भावना के साथ वैशाख सुद-३ से प्रारम्भ करके ज्येष्ठ सुद-१५ तक मंदिर के ब्रह्मचारी पूजारी स्वामी ठाकुरजी की प्रतिदिन अलौकिक कलात्मक मलयागिरी के शीतल चंदन का वाधा से कभी मोगरा और गुलाब के सुगंधित फूलो की वाधा पहनाया गया । इस सेवा के लिये अनेक भक्ति श्रध्धालु भक्तजन यजमान बनकर दिव्य लाभ उठाये थे । निर्जला एकादशी के दिन श्री नरनारयणदेव के सामने आम के वृक्ष की हरी डालियो में अधिक मात्रा में केशर आम द्वारा भव्य आम्रोत्सव का दर्शन कराया गया था ।

ज्येष्ठ सुद-१५ के दिन प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री और प.पू. लालजी महाराजश्री के करकमलो द्वारा सभी देवो को विधिवत रुप से केसर से स्नान कराया गया था । जिसका दर्शन करके संत-हरिभक्त धन्यता का अनुभव किये ।

प.पू. लालजी महाराजश्री के आज्ञा से प्रसादी के सभा मंडप में प्रत्येक मास के दूसरे और चौथे शनिवार के रात्रि में सत्संग सभा प्रतिदिन होती है । प्रत्येक धर्म प्रेमी लोगो को प्रेरित करे श्रीहरि की प्रसन्नता प्राप्त करे ।

(गोरधनभाई वी. सीतापरा)

श्री स्वामिनारायण मंदिर एप्रोच (बापुनगर) में श्री घनश्याम महाराज को चंदन का वाधा, केशर स्नान और समूह महापूजा

ठाकुरजी की बैभव परम्परा की अपनी सेवा की विधि के अनुसार यहाँ मंदिर के पूजारी पू. महंत स्वामी की प्रेरणा से अखात्रीज से प्रारम्भ होकर ज्येष्ठ सुद-१५ तक

मंदिर के दोनो पूजारी स्वामी द्वारा श्री घनश्याम महाराज को किसी-किसी दिन कलात्मक चंदन का वाधा तो किसी दिन मोगरा के सुगंधित फूल का वाधा पहनाकर भक्तजनो को दिव्य दर्शन कराते थे। ता. २९-५-२२ रविवार के दिन अन्नकूट की रचना से केसर आम द्वारा भव्य आम्रोत्सव का दर्शन कराये थे। ज्येष्ठ वद-१ के दिन श्री नरनारायणदेव के पूजारी ब्र. स्वामी अनंतानंदजी के हाथ से वेदोक्त विधि से केसर स्नान कराया गया था।

केसर स्नान के पश्चात चंदन को वाधा (वस्त्र) का यजमानश्रीओने समूह महापूजा का दिव्य लाभ उठाये थे। सेवा भावी यजमान तथा स्वयं सेवक हरिभक्त सेवा करके श्रीहरि की कृपा प्राप्त किये। अपने श्री नरनारायणदेव के छोटे-बड़े प्रत्येक शिखरबध्ध मंदिरो में ठाकुरजी को सुंदर वाधा (वस्त्र) से दर्शन कराया गया।

(गोरधनभाई वी. सीतापरा)

श्री स्वामिनारायण मंदिर बागोसणा का ४० वाँ पाटोत्सव

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की परमकृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आज्ञा तथा स.गु. महंत शा. स्वामी पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी के प्रेरणा एवम् मार्गदर्शन से श्री स्वामिनारायण मंदिर बागोसणा का ४० वाँ पाटोत्सव विधिवत रुप से मनाया गया। जिस में श्रीहरिकृष्ण महाराज का षोडशोपचार अभिषेक, अन्नकूट तथा समूह महापूजा की गई थई। इस अवसर पर शा. पी.पी. स्वामी आदि संत मंडल और माणसा मंदिर से महंत धर्मकिशोर स्वामी आये थे। वे कथा वार्ता का लाभ दिये थे। सभा का संचालन शा. स्वामी दिव्यप्रकाशदासजीने किया था। (स्वामी देवप्रकाशदासजी - उनावा)

श्री स्वामिनारायण मंदिर उनावा

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की परमकृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आज्ञा तथा महंत शा. पी.पी. स्वामी की प्रेरणा से श्री स्वामिनारायण मंदिर उनावा मे ज्येष्ठ सुद-१० को श्रीहरि अर्न्तध्यान तिथि के अवसर पर टाकुरजी को फल-फुल अन्नकूट अंकिताबेन समीरभाई पटेल (झूंडाल) के तरफ से किया गया था। प.भ. मयूरभाई पटेल यजमान पद पर प.भ. रामदास बापा परिवार के यहाँ श्री नरनारायणदेव युवक मंडल द्वारा धुन, भजन, कीर्तन किया गया था। इस अवसर पर महंत शा. स्वा. पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी, स्वा. राजेन्द्रप्रसादजी, स्वा. देवप्रकाशदासजी आदि संत मंडल के साथ पधारे थे। (निहित अतुलभाई पटेल)

श्री स्वामिनारायण मंदिर गांधीनगर से.-२

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की परमकृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आज्ञा से यहाँ के मंदिर के महंत शा. पी.पी. स्वामी की प्रेरणा से श्री स्वामिनारायण मंदिर से-२ में ज्येष्ठ सुद-११ को ठाकुरजी की १०० मण आम चढाया गया था। वह प्रसाद जरुरतमंद लोगो को घर पर भेजा गया था।

(पूजारी स्वामी देवप्रकाशदासजी)

श्री स्वामिनारायण मंदिर वरसोडा

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की परमकृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आज्ञा तथा स.गु. पी.पी. स्वामी की प्रेरणा से श्री स्वामिनारायण मंदिर वरसोडा में हरिभक्तो द्वारा प्रति मास सत्संग सभा का आयोजन किया जाता है। ता. १६-६-२२ के दिन आयोजित सत्संग सभा के अवसर पर गांधीगनर मंदिर से महंतश्री पी.पी. स्वामी संत मंडल के साथ आये थे। जिसमें देव स्वामीने सुंदर कथा का लाभ दिये थे।

(मुक्तराजसिंह चावडा - वरसोजा)

श्री स्वामिनारायण मंदिर मणीपुरा (कडी) का पाटोत्सव

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की परमकृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आज्ञा तथा पूरे धर्मकुल के आशीर्वाद से श्री स्वामिनारायण मंदिर मणीपुरा (कडी) का ७ वाँ पाटोत्सव ता. २२-५-२२ के दिन उत्साहपूर्वक मनाया गया। इस अवसर पर स.गु. महंत शा. पी.पी .स्वामी, महंत स्वामी शा. दिव्यप्रकाशदासजी, स.गु. महंत स्वामी धर्मस्वरुपदासजी आदि संतोने ठाकुरजी को अन्नकूट चढाकर आरती किये थे। सभा में कथावार्ता, कीर्तन धुन करके प्रसाद का यजमान प.भ. महादेवभाई नाथाभाई अन्नकूट के यजमान और पूजारीश्री का सन्मान करके आशीर्वाद दिये थे।

ता. २६-४-२२ चैत्र वद एकादशी को खाखरिया सत्संग मंडल द्वारा धुन-कीर्तन भक्ति की गई थी। इस अवसर पर कोटेश्वर गुरुकुल से व्रजभूषण स्वामी और घनश्याम स्वामी आदि संतोने कथा का लाभ दिये थे।

(धनवंतभाई पटेल)

संप्रदाय का महान तीर्थधाम आदरज (मोटी) दशाब्दी पाटोत्सव

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की परमकृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आज्ञा एवम् समस्त धर्मकुल के आशीर्वाद से तथा महंत स्वामी स.गु. शा. रामकृष्णदासजी और आदरज समस्त सत्संग समाज के सुंदर प्रसास से सम्प्रदाय में सर्वप्रथम श्रीहरिने जहाँ पर सबसे पहले अन्नकूट उत्सव करके चार मुख्य संतो को सद्गुरु की पदवी दिये थे। इस सप्रदाय का दंढाव्य देश का महानतीर्थ मोटी आदरज श्री स्वामिनारायण मंदिर का दशाब्दि वार्षिक पाटोत्सव ता. १०-५-२२ से १४-५-२२ तक मनाया गया। इस अवसर पर श्रीहरि वाक्य सुधा सिंधु पंचान्ह पारायण शा. स्वा. हरिजीवनदासजी, शा. स्वा. विश्वविहारीदासजी, महंत शा. स्वा. वासुदेवचरणादसजी, महंत शा. स्वा. यज्ञप्रकाशदासजी और शा.स्वा. विश्वस्वरुपदासजी के वक्ता पद से पूरी हुई। पूरे अवसर के प्रेरक महंत शा. स्वा. पुरुषोत्तमप्रकासदासजी (गांधीनगर) थे। सभा का संचालन स.गु. शा.स्वा. रामकृष्णदासजीने बढाया था।

पाटोत्सव के मुख्य यजमान प.भ.अ.नि. ईश्वरदास अमीचंददास पटेल परिवार, ह. गं.स्व. डाहीबेन ईश्वरदास पटेल (मोखासण) थे। छोटे-बड़े अवसर का लोग यजमान बनकर लाभ लिये थे। गाँव के तथा बाहर के हरिभक्त कथा श्रवण एवम् दर्शन प्रसाद ग्रहण करके धन्य हुए। (कोठारीश्री आदरज)

श्री स्वामिनारायण मंदिर हिंमतनगर

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की परमकृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आज्ञा एवम् समस्त धर्मकुल के आशीर्वाद से महंत शा. स्वामी प्रेमप्रकाशदासजी के प्रेरणा से श्री स्वामिनारायण मंदिर हिंमतनगर में विराजमान श्री घनश्याम महाराज को वैशाख महीने में मलयागिरी चंदन का वाधा पहनाया गया था। पूर्णिमा के दिन केसर स्नान कराया गया था। आगामी नूतन मंदिर मूर्ति प्रतिष्ठा के उपलक्ष्य में रसोत्सव, ब्रह्मचोरासी और वृद्धाश्रम को भोजन कराया गया था। जिसमें श्री घनश्याम महिला मंडल और युवक मंडल ने सुंदर सेवा दिये थे। (विपुल भगत)

श्री स्वामिनारायण मंदिर मोडासा

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की परमकृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आज्ञा से श्री स्वामिनारायण मंदिर मोडासा में ज्येष्ठ सुद-१० श्रीहरि स्वधामगमन के दिन श्री स्वामिनारायण महामंत्र धुन के ठाकुरजी को अनेक प्रकार के आम चढाये गये थे। बहनोने आम उत्सव मनाया था। (के.पी. प्रजापति)

श्री स्वामिनारायण मंदिर विजापुर में प्रत्येक मास सत्संग सभा

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की परमकृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आज्ञा-आशीर्वाद से गांधीनगर मंदिर के महंत शा. पी.पी. स्वामी की प्रेरणा से विजापुर गाँव के पूरे सत्संगी प्रत्येक पूनम को सत्संग सभा रखते है। ज्येष्ठ सुद-११ को देवप्रकाशदासजी और स्वामी धर्मस्वरुपदासजी द्वारा कथा वार्ता धुन भजन कीर्तन आदि किये थे। (हर्षद आहिर)

श्री स्वामिनारायण म्यूजियम नारणपुरा में श्रीमद् भागवत कथा

भगवान श्री स्वामिनारायण की असीम कृपा से तथा भगवान श्री नरनारायणदेव की पूर्ण कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री, प.पू. १०८ भावि आचार्यश्री व्रजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री के शुभ संकल्प के फल स्वरुप तथा जेतलपुर मंदिर, नाराणपुरा मंदिर के महंत स.गु. शा. स्वामी आत्मप्रकाशदासजी तथा स.गु. शास्त्री स्वामी पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी मार्गदर्शन में जिस स्थान पर भगवान श्री स्वामिनारायण की १८०० जितनी प्रसादी भूत सामान है। श्री स्वामिनारायण म्युजियम में ता. २०-६-२०२२ से २६-६-२०२२ तक भव्य श्रीमद् भागवत कथा का प्रबन्ध किया गया था।

इस कथा पारायण के कथा वाचक शास्त्री स्वामी धर्मनंदनदासजी (जेतलपुरधाम) विराजमान होकर कथामृत पान कराये थे। जिसका यजमान पद का लाभ अ.नि. रसिकलाल गोरधनदास पाटडिया के याद में गं.स्व. सुशीलाबेन रसिकला पाटडिया, प.भ. विरेन्द्रभाई, प.भ. विमलभाई, पूरा पाटडिया भाग लिया था। इस अवसर पर जेतलपुर, कांकरिया, कालुपुर, अंजली, बालवा,

हिम्मतनगर आदि धामो से संत आकर आशीर्वाद दिये थे । नारणपुरा विस्तार के कई हरिभक्त इस कथा का लाभ लिये थे । (कोठारी स्वामी - नारणपुरा)

महिज गाँव के मंदिर का ४६ वाँ पाटोत्सव

आराध्यदेव भगवान श्री स्वामिनारायण तथा भरतखंड के राजाधिराज श्री नरनारायणदेव की पूर्ण कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री, प.पू. १०८ भावि आचार्यश्री व्रजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री के आज्ञा-आशीर्वाद से प.पू. बड़े महाराजश्री तथा समस्त धर्मकुल के दिव्य आशीर्वाद से तथा जेतलपुरधाम के महंत स.गु. शा. स्वामी आत्मप्रकाशदासजी तथा स.गु. शास्त्री स्वामी पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी के मार्गदर्शन में श्री स्वामिनारायण मंदिर महिज का भव्य पाटोत्सव १७-६-२२ को मनाया गया । जेतलपुर धाम से धर्मनंदनदासजी स्वामी तथा अखंडस्वरुपदासजी स्वामीजी आकरके कथा वार्ता का लाभ दिये थे । पाटोत्सव के अवसर पर ठाकरुजी की पूजा, अभिषेक तथा अन्नकूट रखा गया था । जिसके यजमान प.भ. दिनेशभाई पंचाल ने लाभ लिया था । गाँव के भाविक भक्त भी दर्शन तथा कथा का लाभ उठाये थे ।

(साधु धर्मनंदनदास - जेतलपुर)

रामपटेल के मुवाडा गाँव में मूर्ति प्रतिष्ठा महोत्सव

भगवान श्री स्वामिनारायण की असीम कृपा से तथा भगवानश्री नरनारायणदेव की पूर्ण कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री, प.पू. १०८ भावि आचार्यश्री व्रजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री से तथा जेतलपुरधाम-नाराणपुरा मंदिर के महंत स.गु. शा. स्वामी आत्मप्रकाशदासजी तथा स.गु. शास्त्री स्वामी पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी के मार्गदर्शन प्रबन्ध में ता. ६-६-२२ से ८-६-२२ तक राम पटेल के मुवाडा (ता. लुणावाडा, जि. महीसागर) के आँगन में नूतन श्री स्वामिनारायण मंदिर का निर्माण पूर्ण होकर मूर्ति प्रतिष्ठा महोत्सव उल्लासपूर्वक मनाया गया था ।

राम पटेल मुवाडा गाँव में तीनबार मंदिर निर्माण हुआ । सर्वप्रथम स.गु. व्यापकानंद स्वामीने मंदिर बनवाया था । आज तिसरीबार नूतन मंदिर का निर्माण हुआ है । जिस में प.पू. १०८ भावि आचार्य व्रजेन्द्रप्रसादजी महाराज के करकमलो द्वारा प्राण प्रतिष्ठा की गयी । इस अवसर पर श्रीमद् भागवत का दशम स्कंध कथा की गयी । कथा का लाभ शा. धर्मनंदनदासजी (जेतलपुर) किये थे । भूदेवो द्वारा वैदिक कर्म सहित विष्णुयाग की गई । विशाल नगरयात्रा गाँव में निकाली गई थी । पूरे गाँव के लोगो के सहयोग से यह प्रतिष्ठा की गई । इस महोत्सव में जयंतीभाई पटेल आदि भक्तोने तन, मन, धन से सेवा करके जीवन को सफल किये । (साधु धर्मनंदनदास - जेतलपुरधाम)

विसनगर में श्रीमद् भागवत कथा पारायण

सर्वावतारी आराध्यदेव भगवान श्री स्वामिनारायण तथा भगवानश्री नरनारायणदेव की असीमकृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री, प.पू. १०८ भावि आचार्यश्री व्रजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री तथा समस्त धर्मकुल के आशीर्वाद से जेतलपुरधाम-नाराणपुरा मंदिर के महंत स.गु. शा. स्वामी आत्मप्रकाशदासजी की प्रेरणा से महा प्रसादीभूत विसनगर के आँगन में ता. ८-६-२२ से १२-६-२२ तक श्रीमद् भागवत पंचान्ह पारायण का भव्य आयोजन हुआ . जिसके वक्ता पद पर सप्रदाय के मूर्धन्य वक्ता वेदांत भास्कर पूज्य स.गु. शा. स्वामी पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी (जेतलपुरधाम) व्यास आसन पर बैठकर कथामृत का पान कराये थे ।

इस कथा पारायण के यजमान प.भ. रमेशभाई बलदेवभाई मोदी तथा प.भ. जसवंतलाल कांतिलाल मोदी दोनो परिवारने लाभ लिया था । अपने स्वजनो की याद में भगवती परिवारने विशाल ए.सी. होल में कथा का सुंदर प्रबन्ध किये थे । पहले दिन से हाल भर जाता था । बाहर मंडप में LED की व्यवस्था की गई थी । कृष्ण जन्मोत्सव, रुक्मणी विवाह आदि अवसरो को उल्लास पूर्वक मनाया गया था । जेतलपुर, कांकरिया, नारणपुरा, वडनगर, हिंमतनगर, बावला, बापूनगर आदि धाम के संत आये थे । सम्पूर्ण महोत्सव दिव्य और यादगार बना ।

(साधु धर्मनंदनदास - जेतलपुर)

अहमदाबाद मंदिर में श्री ठाकुरजी का थाल तथा संतवर्णी पार्षदो की रसोई देने वालो की सूची

चैत्र सुद-१ प.भ.अ.नि. चौधरी शांताबेन लवजीभाई (प्रतापपुरा), प.भ. पटेल मफतभाई नारणभाई मथुरभाई (झुंडाल), प.भ. पटेल लक्ष्मणभाई मावजीभाई (सांधली), प.भ.अ.नि. नरसिंहभाई पोपटभाई (धरमपुर). **चैत्र सुद-२** प.भ. भावनाबेन (अमदावाद), प.भ. प्रविणभाई सागरदान स्वामिनारायण (गांधीनगर), प.भ. अश्विनभाई परमार (अमदावाद), प.भ. मयुरभाई सोनी (अमदावाद), प.भ. नरेन्द्रभाई द्वारकादास पटेल (राणीप), प.भ. मयंकभाई कामदार (पोरबंदरवाळा), प.भ. केतनभाई रामभाई पटेल (कलोल), प.भ. जयंतीभाई वालजीभाई पटेल (बापुनगर). **चैत्र सुद-३** प.भ.अ.नि. रोबेन जयंतीभाई लुणागरीया (निकोल). **चैत्र सुद-४** प.भ. विभुतिबेन वासुदेवभाई (वापी), प.भ. हरिलाल वल्लभभाई कालावाडीया (वलसाड), तुरा सत्संगी महिला समाज (तुरा). **चैत्र सुद-५** प.भ. सतीष परसोतम गामी (सुपर-कच्छ), प.भ. बळदेवभाई पटेल (निकोल), प.भ. राजुभाई रमेशभाई सावलीया (बापुनगर), प.भ. गोविंदभाई माधवलाल पटेल (वडु). **चैत्र सुद-६** प.भ. ठक्कर योगेशकुमार रतीलाल (अमदावाद), प.भ.अ.नि. प्रविणभाई रामभाई भावसार (अमदावाद). **चैत्र सुद-७** प.भ. मयुर चिनुभाई पटेल (वहेलाल), प.भ. तरूणभाई अश्विनभाई, प.भ. अद्वैतम चिंतन पटेल (गांधीनगर). **चैत्र सुद-८** प.भ. जादवा वेलजी वरसाणी (यु.के.), प.भ. पटेल हरेशकुमार डाह्याभाई (लालोडा), प.भ. बूटीया गणेशभाई डाह्याभाई (कालीयाणा), प.भ. पारे जयेशभाई (अमदावाद), प.भ.अ.नि. जयालक्ष्मीबेन एन. ठक्कर (अमदावाद). **चैत्र सुद-९** रामनवमी (उपवास) चि. रियान तथा हेयान्स जन्म दिने (अमदावाद), प.भ.अ.नि. विठ्ठलदास प्रेमचंददास भावसार (अमदावाद), प.भ. चुनीलाल दुर्लभजी सोनी (राणीप). **चैत्र सुद-१०** प.भ. भूपेन्द्र मूळजी कारा (मांडवी-कच्छ), प.भ. रमणभाई हरगोविंदभाई सोजावाळा, प.भ.अ.नि. पार्षद नानजी भगत (झुंडाल), श्रीजी भरोसे (गोठीब), प.भ.अ.नि. जयेशभाई रमणलाल पटेल (वडुवाळा). **चैत्र सुद-११** प.भ. कल्याण नारण राबडीया (रामपर-वेकरा-कच्छ), प.भ. राजपूत भीखाभाई अखाभाई (उचपा), प.भ. निलेशभाई मेपाणी. **चैत्र सुद-१२** प.भ. मिलनभाई बबाभाई पटेल (धमीज), प.भ. चौधरी सोमाभाई गोबरभाई (प्रतापपुरा), प.भ. आशिष भीभाई भावसार (अमदावाद), प.भ.अ.नि. नारण करशन राघवाणी (बळदीया-कच्छ), प.भ. रामाभाई मफतलाल पटेल (कल्याणपुरा), प.भ.अ.नि. नाथाभाई डाह्याभाई बाबरीया, प.भ. चौधरी पोपटभाई कोठारी (सोलैया), प.भ.अ.नि. वासुदेवभाई गज्जर (अमदावाद), प.भ. मनजी शिवजी हिराणी (नाराणपर-कच्छ). **चैत्र सुद-१३** प.भ.अ.नि. सिध्धार्थ गीरीशभाई (महादेवनगर), प.भ. मारफतीया वृन्दा घनश्यामभाई (अमदावाद), प.भ.अ.नि. सामबाई मनजी वेकरीया (मांडवी-कच्छ), प.भ.अ.नि. मनजी देवजी वेकरीया (मांडवी-कच्छ), प.भ. वर्षाबेन भीभाई राजपूत (उचपा), प.भ. सांख्ययोगी पुष्पाबाई, जसुबाई, हिनाबाई, प्रेमबाई (मांडवी-कच्छ), प.भ. सुरेशभाई बचुभाई मालवणीया (धोळी-सुरेन्द्रनगर), प.भ. कल्याणभाई पटेल कडीवाळा (मोरबी), प.भ. डोड शैल्यराजसिंह महिपतसिंह (मोरबी), प.भ.अ.नि. मंजुलाबेन जगदीशभाई पटेल (गांधीनगर). **चैत्र सुद-१४** प.भ. काजलबेनना लग्न प्रसंगे (कच्छ), प.भ. जीतुभाई उमाकान्तभाई पटेल (अमदावाद), प.भ.अ.नि. वासुदेवभाई गज्जर (अमदावाद). **चैत्र सुद-१५** प.भ. भीभाई मंगळदास जानी (नरोडा), प.भ.अ.नि. हिरजी देवजी वेकरीया (मांडवी-कच्छ), प.भ. लालबाई विरजी लमा राबडीया (मांडवी-कच्छ), प.भ. हरिभाई गोविंदभाई वधासीया (माधापर-कच्छ), प.भ. केवल कश्यप टांक (अमदावाद), प.भ.अ.नि. वालबाई प्रेमजी वरसाणी (सामत्रा-कच्छ), कुमारी तन्वी मनोजकुमार पटेल (मोसण), प.भ.अ.नि. मधुबेन कनुभाई पटेल (नडीयाद), प.भ.अ.नि. रवजी हरजी राबडीया (वाडासर-कच्छ).

चैत्र वद-१ प.भ. चौधरी गोविंदभाई रेवाजी (बालवा), प.भ. पटेल दिपकभाई चतुरभाई (झुंडाल), प.भ. धडुक क्रिष्नाबेन घनश्यामभाई (निकोल), एक हरिभक्त ह. सां. मंजुबा (हवेली), प.भ.अ.नि. घनश्यामभाई पानसुरीया

अहमदाबाद मंदिर में श्री ठाकुरजी का थाल तथा संतवर्णी पार्षदो की रसोई देने वालो की सूची

(अमदावाद), प.भ. धर्मेन्द्रभाई भावसार (अमदावाद), प.भ. कांताबेन लालभाई पटेल (कलोल). **चैत्र वद-२** प.भ. मानव समीरभाई पटेल (अमदावाद), प.भ.अ.नि. सुंदरबेन किरीटभाई राजपुत (अमदावाद), प.भ.अ.नि. कानजीभाई छगनभाई पटेल (सुरेन्द्रनगर). **चैत्र वद-३** प.भ. विजयभाई परबतभाई सेढा (समढीयाळा), प.भ.अ.नि. रत्ना शामजी राबडीया (सरली-कच्छ). **चैत्र वद-४** प.भ.अंबरबेन सोमजीभाई छभाडीया (मांडवी-कच्छ), प.भ.अ.नि. वाघजीभाई माधवलाल पटेल (वडदला), प.भ.अ.नि. दशरथलाल मणीलाल पटेल (वडु). **चैत्र वद-५** प.भ.अ.नि. किरीटभाई भगवानदास सोनी (अमदावाद), प.भ. सोमाभाई रेवाभाई पटेल (रडोदरा), प.भ. परसोतमभाई गोविंदभाई पटेल (अमदावाद), प.भ. वालजी अरजण डबासीया (कच्छ-भुज). **चैत्र वद-६** प.भ. शांताबेन हरिराम त्रिवेदी (कलोल), प.भ. ललीताबेन बबाभाई पटेल (झुंडाल), प.भ.अ.नि. हिरेनकुमार अमृतभाई पोकार (दयापर-कच्छ), प.भ. पटेल चेतन रमेशभाई (अमदावाद). **चैत्र वद-७/८** प.भ.अ.नि. अरविंदाबेन सुरेशभाई पटेल (गोठीब), प.भ. कानजीभाई कुरजी हिराणी (दहींसरा-कच्छ). **चैत्र वद-९** प.भ. बळवंतसिंह हरभमजी वाघेला (बामणवा), प.भ. मनीष विक्रमभाई पटेल (धमासणा), प.भ. कीर्तिकुमार बिपीनचंद्र पटेल (अमदावाद), अ.नि. स.गु. पुराणी स्वामी भक्तिप्रकाशदासजी (छारोडी गुरुकुळ), सत्संगी बहेनो (हवेली), प.भ. डॉ. नवीनभाई पटेल (गांधीनगर), प.भ. मूळजीभाई करशनभाई वरसाणी (सुपर-कच्छ), प.भ. राकेशभाई ठक्कर (अमदावाद), प.भ. अशोक जगजीवनभाई चौहाण, प.भ. पराग बाबुभाई पटेल (वडु). **चैत्र वद-१०** प.भ.अ.नि. किरीटकुमार जीवणलाल मोदी (अमदावाद), प.भ.अ.नि. डॉ. अरूणभाई देवजीभाई पटेल (राणीप), प.भ. मनहरभाई जे. पटेल (वडु). **चैत्र वद-११** प.भ. ए. एम. (अमदावाद). **चैत्र वद-१२** प.भ.अ.नि. वालजीभाई कल्याणभाई हिराणी (मेघपर-कच्छ), प.भ. प्रेमबाई मनजी रूडा (गोडपर-कच्छ), प.भ. रविलाल शिवजी हालाई (दहींसरा-कच्छ), प.भ.अ.नि. ीमजी रवजी देवराज हालाई (सूरजपर-कच्छ), प.भ.अ.नि. शारदाबेन रावजीभाई हरिभाई पटेल (चकलासी), प.भ. मनजी शिवजी हिराणी (नारायणपर-कच्छ), प.भ.अ.नि. मंजुलाबेन जगदीशभाई पटेल (गांधीनगर), प.भ.अ.नि. वसंतबेन झवेरभाई पटेल (उगामेडीवाळा). **चैत्र वद-१३** प.भ.अ.नि. प्रेमबाई करशन पिंडोरीया (सामत्रा-कच्छ), प.भ. जयंतीलाल चेलदास पटेल (मरतोली), प.भ. भोगीलाल मणीलाल ठक्कर (घोडासर), प.भ. अ.नि. घनश्यामभाई प्रभुदास पटेल (धमासणा), प.भ.अ.नि. कुवजी करशन राबडीया (मांडवी-कच्छ). **चैत्र वद-१४** प.भ.अ.नि. लक्ष्मीबेन कानजीभाई (रवापर-कच्छ). **चैत्र वद-३०** प.भ. मेघबाई वालजी केराई (कुंदनपुर-कच्छ), प.भ. घनश्यामभाई गोविंदभाई पटेल (निकोल), प.भ. आरतीबेन सचिनकुमार राठोड (अमदावाद), प.भ. पटेल रंजनबेन प्रकाशभाई (अमदावाद), प.भ. श्रीजय सांकळचंद पटेल (अमदावाद), प.भ. सोनी हसमुभाई चंदुभाई, प.भ. जीतेन्द्रभाई भाटीया (अमदावाद).

ध्वजा के यजमान : प.भ. नयनाबेन हरेशभाई महेता (अहमदाबाद)

श्री स्वामिनारायण मंदिर सिध्धपुर

नये महंत स्वामी स.गु. शास्त्री स्वामी कुंजविहारीदासजी गुरु शास्त्री स्वामी प्रेमस्वरुपदासजी की नियुक्ति की गयी है।

संपर्क : ९३२७२८३२४५ - वोटसएप : ९१०४०२१००८

संपादक, मुद्रक एवं प्रकाशक : महंत शास्त्री स्वामी निर्गुणदासजी द्वारा, श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद के लिए श्रीस्वामिनारायण प्रिन्टींग प्रेस, श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद (गुजरात) पीन कोड-३८० ००१ से मुद्रित एवं श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद (गुजरात) पीन कोड-३८० ००१ द्वारा प्रकाशित।

राम पटेल ना मुवाडा (पंचमहाल) गाँव में मूर्ति प्रतिष्ठा करते तथा सभा को आशीर्वाद देते प.पू. लालजी महाराजश्री ।

सापकडा (मूली देश) मूर्ति प्रतिष्ठा करते प.पू. आचार्य महाराजश्री ।

बाल्टीमोर (अमेरिका) मंदिर का ७ वे पाटोत्सव के अवसर पर ठाकोरजी का अभिषेक करते हुए प.पू. लालजी महाराजश्री ।

ईडर मंदिर के पाटोत्सव के अवसर पर अन्नकूट दर्शन ।

"उत्सव" के उपलक्ष्य में मूली मंदिर में अखंड धुन ।

Registered under RNI - No - GUJHIN/2007/20220 " Permitted to post at
Ahd PSO on 11 the every month under postal Regd. No. GUJ. 581/2021-2023
issued SSP Ahd Valid up to 31-12-2023

समस्त सत्संग जोग

श्री स्वामिनारायण मंदिर नारणपुरा अहमदाबाद में रहने वाले (१) स्वामी प्रेमस्वरुपदासजी गुरु शास्त्री स्वामी कृष्णप्रकाशदासजी (२) स्वामी अनुपमस्वरुपदासजी गुरु स्वामी कृष्णप्रकाशदासजी इन दोनो संत श्री नरनारायणदेव देश के नागरिक नही रहे । इसके साथे कोई संत या सत्संगी किसी प्रकार का व्यवहार नही करना । जिस पर सभी हरिभक्त ध्यान दे । दोनो संत ने नियम का उल्लंघन तथा सम्प्रदाय की गरिमा को ठेस पहुंचाई है । अनेक शिकायत हरिभक्तो द्वारा प.पू. आचार्य महाराजश्री को मीली और प.पू. महाराजश्रीने त्यागी पंच का ध्यान दोरते हुए । त्यागी पंचने पू. महाराजश्री की सम्मति से यह निर्णय लिया है ।

Praful Kharsani